



Hargharpanditji

॥ श्री उत्पन्ना एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री उत्पन्ना एकादशी व्रत कथा ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः॥

उत्पन्ना एकादशी का परिचय

मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को उत्पन्ना एकादशी कहा जाता है। यह वर्ष की प्रथम एकादशी मानी जाती है, जिससे एकादशी व्रतों का शुभारंभ होता है। इस दिन एकादशी देवी का प्राकट्य हुआ था, इसलिए इसका नाम उत्पन्ना एकादशी पड़ा। यह व्रत भगवान श्रीहरि विष्णु को अत्यंत प्रिय है और इसके प्रभाव से समस्त पापों का नाश, भय का अंत तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कथा प्रारंभ

धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? इसकी महिमा और व्रत कथा कृपया विस्तार से बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे राजन्! यह एकादशी उत्पन्ना एकादशी के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी कथा अत्यंत पवित्र और पापों का नाश करने वाली है। इसे सुनने मात्र से भी महान पुण्य प्राप्त होता है।"

प्राचीन काल में मुर नाम का एक अत्यंत बलशाली और क्रूर असुर था।

उसने देवताओं, ऋषियों और समस्त लोकों को अपने अत्याचारों से पीड़ित कर रखा था। उसके भय से सभी देवता भगवान शिव के पास गए। भगवान शिव ने उन्हें भगवान श्रीहरि विष्णु की शरण में जाने का परामर्श दिया।

देवता भगवान विष्णु के पास पहुँचे और अपनी व्यथा सुनाई। भगवान श्रीहरि ने देवताओं को आश्चस्त किया और मुरासुर से युद्ध करने के लिए निकल पड़े।

भगवान विष्णु और मुरासुर के बीच हजारों वर्षों तक भीषण युद्ध हुआ। मुरासुर अत्यंत पराक्रमी था। युद्ध करते-करते भगवान विष्णु विश्राम के लिए हिमालय की बदरिकाश्रम क्षेत्र स्थित सिंहावती नामक गुफा में चले गए और योगनिद्रा में लीन हो गए।

मुरासुर भी वहाँ पहुँच गया। उसने सोचा कि यही उचित अवसर है और वह सोते हुए भगवान विष्णु पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा। उसी समय भगवान विष्णु के दिव्य तेज से एक अत्यंत तेजस्विनी, दिव्य और शस्त्रधारिणी देवी प्रकट हुई। उस देवी ने मुरासुर को युद्ध के लिए ललकारा। दोनों के बीच घोर युद्ध हुआ और अंततः देवी ने अपने दिव्य शस्त्रों से मुरासुर का वध कर दिया।

कुछ समय बाद भगवान विष्णु योगनिद्रा से जागे और मुरासुर का वध हुआ देखकर आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने उस तेजस्विनी देवी से पूछा—

"हे देवी! इस दुष्ट असुर का वध किसने किया है?"

देवी ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया—

"हे प्रभु! मैं आपके ही दिव्य तेज से उत्पन्न हुई हूँ। आपके विश्राम के समय इस दुष्ट असुर ने आप पर आक्रमण करना चाहा, इसलिए मैंने इसका वध किया।"

भगवान श्रीहरि विष्णु अत्यंत प्रसन्न हुए और बोले—

"हे देवी! तुम आज एकादशी तिथि में प्रकट हुई हो, इसलिए तुम्हारा नाम एकादशी होगा। जो मनुष्य इस तिथि को श्रद्धा और नियमपूर्वक व्रत करेगा, उसके समस्त पाप नष्ट होंगे, उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होगी तथा अंत में वह मेरे परम धाम को प्राप्त करेगा।"

तभी से यह तिथि उत्पन्ना एकादशी के नाम से प्रसिद्ध हुई और एकादशी

व्रत का फल

उत्पन्ना एकादशी का व्रत करने से—
समस्त पापों का नाश होता है।
शत्रुओं और भय से रक्षा होती है।
भगवान श्रीहरि विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है।
मन, बुद्धि और आत्मा की शुद्धि होती है।
सभी प्रकार के कष्ट और विघ्न दूर होते हैं।
अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है।

कथा का संदेश

उत्पन्ना एकादशी की कथा हमें सिखाती है कि भगवान की कृपा से अधर्म का अंत और धर्म की विजय निश्चित है। श्रद्धा, संयम और भक्ति के साथ किया गया एकादशी व्रत जीवन के सभी पापों और बाधाओं का नाश कर आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है।

फलश्रुति

जो श्रद्धालु उत्पन्ना एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत करता है, इसकी कथा का पाठ या श्रवण करता है तथा भगवान श्रीहरि विष्णु और एकादशी देवी का स्मरण करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर सुख, समृद्धि और अंत में भगवान विष्णु के परम धाम को प्राप्त करता है।
॥ इति श्री उत्पन्ना एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥